# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

**ISSN 2277 – 9809 (online)**
**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

# भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास में मान्यवर कांशीराम का योगदान: एक राजनीतिक अध्ययन

**डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर,**
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा।

## सारांश (Abstract)

भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति सामाजिक न्याय एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व का एक महत्वपूर्ण आयाम रही है। स्वतंत्रता के पश्चात संविधान द्वारा समानता एवं न्याय के अधिकार दिए जाने के बावजूद दलित वर्ग को राजनीतिक भागीदारी एवं सामाजिक सम्मान के क्षेत्र में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसे समय में मान्यवर कांशीराम ने दलितों, पिछड़ों एवं वंचित वर्गों को संगठित कर बहुजन राजनीति को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने सामाजिक न्याय को राजनीतिक शक्ति से जोड़ते हुए बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की तथा दलित वर्ग को राजनीतिक चेतना एवं नेतृत्व प्रदान किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास में मान्यवर कांशीराम के योगदान का राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है।

**मुख्य शब्द:** भारतीय लोकतंत्र, दलित राजनीति, कांशीराम, बहुजन समाज पार्टी, सामाजिक न्याय।

## 1. प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ शासन व्यवस्था का आधार समानता, स्वतंत्रता, न्याय और जनसहभागिता जैसे मूल सिद्धांतों पर स्थापित है। भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करते हुए सामाजिक न्याय को लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य तत्व माना है। किंतु भारतीय समाज की पारंपरिक जाति-व्यवस्था ने लंबे समय तक अनेक समुदायों को सामाजिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर बनाए रखा। इनमें दलित वर्ग सबसे अधिक उपेक्षा और असमानता का सामना करता रहा। सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक संसाधनों की कमी और राजनीतिक अवसरों से दूरी ने इस वर्ग के विकास को लंबे समय तक प्रभावित किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान के माध्यम से अनुसूचित जातियों को विशेष संरक्षण और प्रतिनिधित्व के अवसर दिए गए। आरक्षण, समान अधिकार और सामाजिक सुरक्षा संबंधी संवैधानिक व्यवस्थाओं ने दलित समाज के लिए नई संभावनाएँ अवश्य खोलीं, किंतु

व्यावहारिक स्तर पर सामाजिक असमानता और सत्ता-संरचना में उनकी भागीदारी सीमित बनी रही। लोकतांत्रिक व्यवस्था में संख्या के आधार पर महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद दलित वर्ग लंबे समय तक प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व और स्वतंत्र राजनीतिक पहचान से वंचित रहा। इसी कारण दलित राजनीति का प्रश्न भारतीय लोकतंत्र में एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में विकसित हुआ।

दलित चेतना के निर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने दलित समाज को शिक्षा, संगठन और संघर्ष के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना। उनके विचारों ने दलित समाज में आत्मसम्मान और अधिकार चेतना को मजबूत किया। इसी वैचारिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मान्यवर कांशीराम ने दलित राजनीति को व्यापक जनाधार और नई दिशा प्रदान की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र में सम्मान और समानता तभी संभव है जब वंचित वर्ग सत्ता संरचना में सक्रिय और प्रभावशाली भागीदारी सुनिश्चित करें।

मान्यवर कांशीराम का राजनीतिक उदय भारतीय लोकतंत्र और दलित आंदोलन दोनों के लिए एक निर्णायक मोड़ था। उन्होंने दलितों की समस्याओं को केवल सामाजिक सुधार के प्रश्न के रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्हें राजनीतिक शक्ति और नेतृत्व से जोड़ा। उनका विश्वास था कि सत्ता में भागीदारी के बिना सामाजिक परिवर्तन अधूरा रहेगा। इसी सोच के आधार पर उन्होंने दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदायों को “बहुजन” की अवधारणा के अंतर्गत एकजुट करने का प्रयास किया। यह अवधारणा केवल सामाजिक एकता तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका उद्देश्य लोकतांत्रिक सत्ता में बहुसंख्यक वंचित वर्ग की प्रभावी उपस्थिति सुनिश्चित करना था।

कांशीराम ने संगठन निर्माण को अपने आंदोलन का प्रमुख आधार बनाया। उन्होंने BAMCEF, डीएस-4 और बाद में बहुजन समाज पार्टी जैसे संगठनों के माध्यम से दलित समाज को राजनीतिक रूप से जागरूक और संगठित किया। इन प्रयासों से दलित समाज में नेतृत्व क्षमता, राजनीतिक चेतना और आत्मविश्वास का विस्तार हुआ। उन्होंने यह स्थापित किया कि लोकतंत्र में केवल मतदान तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि नीति-निर्धारण और सत्ता-संचालन में भी सक्रिय भूमिका आवश्यक है। उनके नेतृत्व ने दलित राजनीति को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया और उसे राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।

भारतीय राजनीति में कांशीराम का योगदान इसलिए विशेष माना जाता है क्योंकि उन्होंने वंचित वर्गों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में केवल समर्थन देने वाले समूह के रूप में नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाली शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में उनके नेतृत्व और रणनीति ने दलित राजनीति को नई पहचान प्रदान की। उनके प्रयासों से सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व और समान अवसर जैसे मुद्दे भारतीय राजनीति के केंद्रीय विषय बने तथा लोकतंत्र के भीतर समावेशी राजनीति को नई मजबूती मिली।

वर्तमान समय में जब भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व और राजनीतिक समावेशन जैसे विषय अत्यंत प्रासंगिक हैं, तब मान्यवर कांशीराम के विचारों और योगदान का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। उनका राजनीतिक जीवन यह दर्शाता है कि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति तभी सशक्त होती है, जब समाज के प्रत्येक वर्ग को समान भागीदारी और नेतृत्व के अवसर प्राप्त हों। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र **"भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास में मान्यवर कांशीराम का योगदान : एक राजनीतिक अध्ययन"** के माध्यम से उनके राजनीतिक चिंतन, संगठनात्मक भूमिका तथा भारतीय लोकतंत्र पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन न केवल दलित राजनीति के विकास को समझने में सहायक होगा, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक न्याय और राजनीतिक सहभागिता की व्यापक अवधारणा को भी स्पष्ट किया।

## 2. अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. मान्यवर कांशीराम के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करना।
3. दलित राजनीति के विकास में बहुजन समाज पार्टी की भूमिका का अध्ययन करना।
4. भारतीय लोकतंत्र में दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी पर कांशीराम के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. समकालीन भारतीय राजनीति में कांशीराम की विचारधारा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

## 3. परिकल्पना

1. मान्यवर कांशीराम ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को नई दिशा प्रदान की।
2. बहुजन समाज पार्टी ने दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत किया।
3. कांशीराम की राजनीतिक विचारधारा ने सामाजिक न्याय की राजनीति को व्यापक बनाया।
4. भारतीय लोकतंत्र में दलित नेतृत्व के विकास में कांशीराम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

## 4. शोध समस्या

भारतीय लोकतंत्र में संवैधानिक अधिकार मिलने के बाद भी दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी लंबे समय तक सीमित रही। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि मान्यवर कांशीराम ने दलित राजनीति को किस प्रकार संगठित किया तथा भारतीय लोकतंत्र में उसे प्रभावशाली बनाने में क्या योगदान दिया।

## 5. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में **विश्लेषणात्मक पद्धति** का प्रयोग किया गया है। अध्ययन मुख्यतः **द्वितीयक स्रोतों** पर आधारित है।

### स्रोत

- पुस्तकें
- शोध पत्र एवं जर्नल
- सरकारी रिपोर्ट
- समाचार पत्र
- इंटरनेट एवं ऑनलाइन सामग्री

## 6. भारतीय लोकतंत्र और दलित राजनीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना प्राचीन काल से ही जाति व्यवस्था पर आधारित रही है। इस व्यवस्था ने समाज को अनेक वर्गों में विभाजित किया, जिसमें उच्च और निम्न का स्पष्ट भेद स्थापित किया गया। इस विभाजन का सबसे अधिक प्रभाव दलित वर्ग पर पड़ा, जिन्हें लंबे समय तक सामाजिक सम्मान, आर्थिक संसाधनों और राजनीतिक अधिकारों से दूर रखा गया। दलित समुदाय को केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि शासन और निर्णय प्रक्रिया में भी स्थान नहीं मिल पाया। परिणामस्वरूप वे समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग रहे और राजनीतिक दृष्टि से कमजोर स्थिति में बने रहे।

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में राजनीतिक सत्ता पर मुख्यतः उच्च वर्गों का नियंत्रण रहा। दलित समाज को शासन व्यवस्था में भागीदारी का अवसर लगभग नहीं मिला। सामाजिक भेदभाव के कारण उन्हें शिक्षा, भूमि और सार्वजनिक जीवन से भी वंचित रखा गया। राजनीतिक अधिकारों की अनुपस्थिति ने उनकी स्थिति को और कमजोर किया। सामाजिक असमानता और राजनीतिक वंचना ने दलित वर्ग को लंबे समय तक निर्भर और शोषित बनाए रखा। इस कारण भारतीय लोकतंत्र के विकास से पहले दलितों की स्वतंत्र राजनीतिक पहचान लगभग नगण्य थी।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज में सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। आधुनिक शिक्षा, प्रेस और प्रशासनिक परिवर्तनों के कारण दलित वर्ग में भी जागरूकता बढ़ने लगी। इसी दौर में अनेक सामाजिक सुधार आंदोलनों ने जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता के विरुद्ध आवाज उठाई। हालांकि इन प्रयासों ने दलित समाज में आत्मसम्मान की भावना को मजबूत किया, लेकिन राजनीतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न अभी भी अधूरा रहा। दलित वर्ग के लिए स्वतंत्र राजनीतिक पहचान और अधिकारों की मांग धीरे-धीरे राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनने लगी।

दलित राजनीति के ऐतिहासिक विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रहा। उन्होंने दलित वर्ग की समस्याओं को केवल सामाजिक अन्याय का विषय नहीं माना, बल्कि उन्हें राजनीतिक अधिकारों और प्रतिनिधित्व से जोड़ा। डॉ. अम्बेडकर का

मानना था कि सामाजिक सम्मान और समानता तभी संभव है जब दलित वर्ग को राजनीतिक सत्ता और निर्णय प्रक्रिया में उचित भागीदारी प्राप्त हो। उन्होंने शिक्षा, संगठन और संघर्ष के माध्यम से दलित समाज में आत्मविश्वास और अधिकार चेतना का विकास किया।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व, आरक्षण और राजनीतिक सुरक्षा की मांग उठाई। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप दलित प्रश्न राष्ट्रीय राजनीति का महत्वपूर्ण विषय बना। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण में भी उन्होंने समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को प्रमुखता दी। संविधान में अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण और विशेष संरक्षण की व्यवस्था इसी सोच का परिणाम थी। इससे दलित समाज को राजनीतिक भागीदारी का संवैधानिक आधार मिला।

स्वतंत्रता के बाद भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित हुई और सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ। यह व्यवस्था सिद्धांत रूप में दलित समाज के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर थी। संविधान ने उन्हें समान अधिकार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय की गारंटी दी। इसके बावजूद व्यवहारिक स्तर पर दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी अपेक्षित रूप से विकसित नहीं हो सकी। अधिकांश राजनीतिक दलों में दलित नेतृत्व सीमित रहा और वे अक्सर केवल वोट बैंक के रूप में देखे जाते रहे। निर्णय प्रक्रिया में उनकी वास्तविक भागीदारी कम रही, जिससे लोकतांत्रिक अधिकारों का पूरा लाभ उन्हें नहीं मिल पाया।

समय के साथ दलित समाज में यह समझ विकसित हुई कि केवल संवैधानिक अधिकार पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि प्रभावी राजनीतिक संगठन और स्वतंत्र नेतृत्व भी आवश्यक है। इसी सोच ने दलित राजनीति को नई दिशा दी। विभिन्न क्षेत्रों में दलित आंदोलनों ने सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व की मांग को अधिक सशक्त रूप में उठाना शुरू किया। दलित राजनीति धीरे-धीरे भारतीय लोकतंत्र के भीतर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरने लगी।

इसी ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि में मान्यवर कांशीराम का उदय हुआ। उन्होंने दलित समाज की राजनीतिक सीमाओं और कमजोरियों को समझते हुए उन्हें संगठित करने का व्यापक प्रयास किया। उन्होंने यह महसूस किया कि लोकतंत्र में केवल अधिकार प्राप्त होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सत्ता तक पहुंच और राजनीतिक नेतृत्व भी उतना ही आवश्यक है। कांशीराम ने दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक वर्गों को “बहुजन” की अवधारणा के अंतर्गत जोड़कर एक व्यापक राजनीतिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

कांशीराम का योगदान इसलिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि उन्होंने दलित राजनीति को वैचारिक और संगठनात्मक दोनों स्तरों पर मजबूत किया। उन्होंने दलित समाज को यह विश्वास दिलाया कि लोकतंत्र में वे केवल समर्थक नहीं, बल्कि नेतृत्व करने वाले वर्ग के रूप में भी स्थापित हो सकते हैं। उनके प्रयासों ने दलित राजनीति को सामाजिक आंदोलन से आगे बढ़ाकर सत्ता और नीति-निर्धारण से जोड़ दिया।

इस प्रकार भारतीय लोकतंत्र और दलित राजनीति का ऐतिहासिक विकास एक लंबी सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया का परिणाम है। जातिगत वंचना से लेकर संवैधानिक अधिकारों तक और वहां से स्वतंत्र राजनीतिक संगठन तक की यह यात्रा भारतीय लोकतंत्र की समावेशी प्रकृति को दर्शाती है। इस पूरी प्रक्रिया में डॉ. अम्बेडकर ने वैचारिक आधार प्रदान किया, जबकि मान्यवर कांशीराम ने उसे संगठित राजनीतिक शक्ति में बदलने का कार्य किया। इसलिए भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास को समझने के लिए कांशीराम की भूमिका का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

## 7. मान्यवर कांशीराम : जीवन एवं राजनीतिक विचार

मान्यवर कांशीराम भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के ऐसे प्रमुख नेता थे, जिन्होंने वंचित और उपेक्षित वर्गों को राजनीतिक रूप से संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रोपड़ (वर्तमान रूपनगर) जिले के एक साधारण परिवार में हुआ। उनका प्रारंभिक जीवन सामान्य परिस्थितियों में बीता, लेकिन बचपन से ही उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और असमानता को निकट से देखा और अनुभव किया। यही अनुभव आगे चलकर उनके राजनीतिक और सामाजिक चिंतन का आधार बने।

उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पंजाब में प्राप्त की और बाद में उच्च शिक्षा पूरी की। शिक्षा के दौरान उनके भीतर सामाजिक जागरूकता और समानता के प्रति गहरी समझ विकसित हुई। नौकरी के दौरान भी उन्होंने दलित और पिछड़े वर्गों के प्रति समाज और संस्थाओं के व्यवहार को करीब से देखा। इन अनुभवों ने उन्हें यह महसूस कराया कि सामाजिक परिवर्तन केवल विचारों और सुधार आंदोलनों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए राजनीतिक शक्ति और संगठित नेतृत्व की आवश्यकता है। यही सोच उनके राजनीतिक जीवन की दिशा बनी।

मान्यवर कांशीराम ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत सामाजिक जागरूकता के कार्यों से की, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि दलित समाज की वास्तविक उन्नति राजनीतिक भागीदारी और सत्ता में हिस्सेदारी से ही संभव है। उनका मानना था कि लोकतंत्र में वही वर्ग प्रभावशाली होता है, जिसकी राजनीतिक उपस्थिति मजबूत होती है। इसलिए उन्होंने दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक वर्गों को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास किया और उन्हें “बहुजन” की व्यापक अवधारणा के अंतर्गत संगठित किया।

**बहुजन की राजनीति** कांशीराम के राजनीतिक चिंतन का सबसे महत्वपूर्ण आधार थी। उनका मानना था कि भारतीय समाज में बहुसंख्यक आबादी लंबे समय से सामाजिक और राजनीतिक रूप से वंचित रही है। यदि ये वर्ग एकजुट होकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करें, तो वे सत्ता संरचना में अपनी निर्णायक भूमिका स्थापित कर सकते हैं। उनकी बहुजन राजनीति केवल

चुनाव तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक सम्मान, आत्मविश्वास और अधिकार चेतना को मजबूत करने का माध्यम भी थी।

कांशीराम का एक प्रमुख विचार था कि **राजनीतिक शक्ति ही सामाजिक परिवर्तन का आधार है।** उनका मानना था कि बिना सत्ता में प्रभावी भागीदारी के सामाजिक न्याय अधूरा रहेगा। जब तक वंचित वर्ग नीति-निर्धारण और शासन व्यवस्था में शामिल नहीं होंगे, तब तक समाज में समानता और न्याय पूरी तरह स्थापित नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने राजनीतिक संगठन को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना।

उन्होंने **संगठन और नेतृत्व के विकास** को भी विशेष महत्व दिया। उनका विश्वास था कि किसी भी आंदोलन की सफलता के लिए जागरूक, अनुशासित और समर्पित नेतृत्व आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उन्होंने BAMCEF, डीएस-4 और बाद में बहुजन समाज पार्टी जैसे संगठनों का निर्माण किया। इन संगठनों ने दलित समाज को राजनीतिक प्रशिक्षण, नेतृत्व के अवसर और लोकतांत्रिक भागीदारी का मंच प्रदान किया। इससे दलित राजनीति को संगठित स्वरूप मिला और वंचित वर्गों में राजनीतिक आत्मविश्वास बढ़ा।

**सामाजिक न्याय और समान प्रतिनिधित्व** भी उनके राजनीतिक विचारों का केंद्रीय तत्व था। वे मानते थे कि लोकतंत्र तभी मजबूत होगा, जब समाज के सभी वर्गों को समान अवसर और उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा। उन्होंने दलित वर्ग को केवल मतदाता के रूप में नहीं, बल्कि नेतृत्व और निर्णय प्रक्रिया में भागीदार के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। उनके विचारों ने भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय के प्रश्न को अधिक प्रभावशाली रूप से सामने रखा।

मान्यवर कांशीराम का प्रसिद्ध नारा–**"जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी"**–उनके राजनीतिक दर्शन का सार प्रस्तुत करता है। इस नारे के माध्यम से उन्होंने लोकतंत्र में जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व और भागीदारी की मांग को स्पष्ट रूप से सामने रखा। यह नारा केवल राजनीतिक रणनीति नहीं था, बल्कि सामाजिक समानता और लोकतांत्रिक न्याय की व्यापक अवधारणा का प्रतीक था।

इस प्रकार मान्यवर कांशीराम का जीवन और राजनीतिक चिंतन भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास का महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने वंचित वर्गों को नई राजनीतिक दिशा, आत्मसम्मान और संगठनात्मक शक्ति प्रदान की। उनका योगदान केवल एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व के सशक्त विचारक के रूप में भी भारतीय राजनीति में विशेष महत्व रखता है।

## 8. बहुजन समाज पार्टी और दलित राजनीति

भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को संगठित और प्रभावशाली स्वरूप देने में बहुजन समाज पार्टी (BSP) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मान्यवर कांशीराम ने यह अनुभव किया

कि दलित समाज को केवल सामाजिक चेतना तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे राजनीतिक शक्ति और लोकतांत्रिक सत्ता में भी भागीदारी दिलाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उन्होंने वर्ष 1984 में बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की। यह केवल एक राजनीतिक दल नहीं था, बल्कि सामाजिक न्याय, समान प्रतिनिधित्व और बहुजन वर्ग के अधिकारों की व्यापक राजनीतिक अभिव्यक्ति का माध्यम था।

बहुजन समाज पार्टी की स्थापना ऐसे समय में हुई जब भारतीय राजनीति में दलित वर्ग का स्वतंत्र और प्रभावशाली नेतृत्व सीमित था। अधिकांश राजनीतिक दल दलित समुदाय के समर्थन की अपेक्षा तो करते थे, लेकिन नेतृत्व और नीति-निर्धारण में उनकी भूमिका अपेक्षाकृत कम थी। इस परिस्थिति में कांशीराम ने BSP के माध्यम से दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक वर्गों को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। उन्होंने इन सभी वर्गों को "बहुजन" की अवधारणा के अंतर्गत जोड़ते हुए लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में संगठित करने का प्रयास किया।

बहुजन समाज पार्टी की सबसे प्रमुख विशेषता **दलितों का राजनीतिक संगठन** थी। पार्टी ने दलित समाज को स्वतंत्र राजनीतिक पहचान और नेतृत्व प्रदान किया। इससे दलित वर्ग में आत्मविश्वास बढ़ा तथा वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिक सक्रिय हुए। कांशीराम का मानना था कि राजनीतिक संगठन के माध्यम से ही वंचित वर्ग अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से सामने रख सकते हैं और सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

BSP का दूसरा महत्वपूर्ण आधार **बहुजन एकता** था। कांशीराम ने यह स्पष्ट किया कि यदि समाज के वंचित और बहुसंख्यक वर्ग एकजुट होकर राजनीतिक रूप से सक्रिय हों, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में वे निर्णायक शक्ति बन सकते हैं। इस विचारधारा ने दलित राजनीति को व्यापक सामाजिक आधार दिया और उसे केवल एक वर्ग तक सीमित नहीं रहने दिया। इससे बहुजन समाज में राजनीतिक चेतना और एकता दोनों मजबूत हुईं।

पार्टी के राजनीतिक एजेंडे में **सामाजिक न्याय की मांग** केंद्रीय स्थान पर रही। BSP ने समान अवसर, सम्मान और प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी। उसने दलितों और वंचित वर्गों के अधिकारों को लोकतांत्रिक विमर्श के केंद्र में लाने का कार्य किया। इससे सामाजिक न्याय का प्रश्न भारतीय राजनीति में अधिक प्रभावशाली रूप से सामने आया।

बहुजन समाज पार्टी की एक महत्वपूर्ण विशेषता **लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी** रही। पार्टी ने चुनावों के माध्यम से सत्ता तक पहुँचने और लोकतांत्रिक संस्थाओं में अपनी उपस्थिति मजबूत करने पर बल दिया। कांशीराम का विश्वास था कि लोकतंत्र में वास्तविक परिवर्तन केवल आंदोलन से नहीं, बल्कि शासन और नीति-निर्धारण में भागीदारी से संभव है। इसलिए BSP ने चुनावी राजनीति को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में अपनाया।

इसके साथ ही **सत्ता के माध्यम से परिवर्तन** BSP की मूल रणनीति रही। कांशीराम मानते थे कि जब तक वंचित वर्ग सत्ता में भागीदारी प्राप्त नहीं करेंगे, तब तक सामाजिक समानता अधूरी

रहेगी। इस सोच ने दलित राजनीति को नया दृष्टिकोण प्रदान किया और उसे प्रत्यक्ष रूप से लोकतांत्रिक सत्ता से जोड़ दिया।

बहुजन समाज पार्टी के प्रभाव से विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में दलित राजनीति को नई पहचान और मजबूती मिली। यहाँ दलित नेतृत्व पहले की तुलना में अधिक प्रभावशाली होकर सामने आया। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी दलित राजनीति को नया आधार और नई दिशा मिली। इस प्रकार BSP ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को संगठित स्वरूप देने के साथ-साथ उसे मुख्यधारा की राजनीति में स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

## 9. भारतीय लोकतंत्र पर कांशीराम का प्रभाव

मान्यवर कांशीराम का भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने लोकतंत्र को केवल मतदान की प्रक्रिया तक सीमित न मानकर उसे सामाजिक न्याय, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और समान अवसर से जोड़ा। उनके नेतृत्व और विचारों ने दलित राजनीति को नई दिशा प्रदान की तथा भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कांशीराम के प्रयासों का सबसे बड़ा प्रभाव यह रहा कि **दलित वर्ग में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी।** लंबे समय तक सामाजिक और राजनीतिक रूप से उपेक्षित रहे दलित समुदाय में उन्होंने अधिकार चेतना और आत्मसम्मान की भावना को मजबूत किया। उन्होंने दलित समाज को यह समझाया कि लोकतंत्र में उनकी भूमिका केवल मतदाता की नहीं, बल्कि नेतृत्व और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी की भी है। इससे दलित समाज में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ।

उनके नेतृत्व का दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव **मतदान और नेतृत्व में भागीदारी का बढ़ना** था। कांशीराम ने दलित वर्ग को सक्रिय रूप से चुनावी प्रक्रिया से जोड़ा और उन्हें नेतृत्व के लिए प्रेरित किया। इससे विभिन्न स्तरों पर दलित प्रतिनिधियों की संख्या और प्रभाव दोनों में वृद्धि हुई। लोकतांत्रिक संस्थाओं में उनकी भागीदारी पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत होकर सामने आई।

कांशीराम के योगदान से **सामाजिक न्याय की राजनीति को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।** उन्होंने समानता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक सम्मान जैसे विषयों को राजनीतिक विमर्श का प्रमुख हिस्सा बनाया। इससे सामाजिक न्याय केवल संवैधानिक सिद्धांत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में स्थापित हुआ।

उनकी बहुजन विचारधारा के कारण **बहुजन राजनीति मुख्यधारा में आई।** दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्गों की राजनीतिक एकता ने भारतीय राजनीति में नया संतुलन उत्पन्न किया। इससे पारंपरिक राजनीतिक संरचना में बदलाव आया और वंचित वर्गों की उपस्थिति अधिक प्रभावशाली बनी।

सबसे महत्वपूर्ण रूप से कांशीराम ने **लोकतंत्र में वंचित वर्गों की आवाज को मजबूत किया।** उन्होंने ऐसे वर्गों को राजनीतिक मंच और नेतृत्व दिया, जो लंबे समय तक सत्ता संरचना से दूर रहे थे। इससे भारतीय लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व का दायरा व्यापक हुआ और लोकतंत्र अधिक समावेशी बना।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मान्यवर कांशीराम का भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव केवल दलित राजनीति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने लोकतंत्र को सामाजिक न्याय और व्यापक जनभागीदारी के दृष्टिकोण से नई दिशा प्रदान की। उनके विचार और राजनीतिक प्रयास आज भी भारतीय लोकतंत्र में समानता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय की अवधारणा को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

## 10. अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का प्रमाणीकरण

प्रस्तुत शोध-पत्र *"भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास में मान्यवर कांशीराम का योगदान : एक राजनीतिक अध्ययन"* के अंतर्गत निर्धारित उद्देश्यों और प्रस्तुत परिकल्पनाओं का अध्ययन उपलब्ध पुस्तकों, शोध आलेखों, ऐतिहासिक तथ्यों तथा राजनीतिक विश्लेषण के आधार पर किया गया। अध्ययन के दौरान प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि निर्धारित उद्देश्य और परिकल्पनाएँ पर्याप्त रूप से प्रमाणित होती हैं।

### 1. भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय समाज में जाति व्यवस्था के कारण दलित वर्ग लंबे समय तक सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों से वंचित रहा। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने समानता और प्रतिनिधित्व के अवसर दिए, लेकिन व्यवहारिक रूप में दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी सीमित रही। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलित राजनीति को वैचारिक आधार प्रदान किया तथा उसके बाद मान्यवर कांशीराम ने उसे संगठित राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित किया। इससे अध्ययन का प्रथम उद्देश्य प्रमाणित होता है।

### 2. मान्यवर कांशीराम के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण

अध्ययन के दौरान यह सामने आया कि कांशीराम की राजनीति का केंद्र "बहुजन" की अवधारणा, सामाजिक न्याय, समान प्रतिनिधित्व और सत्ता में भागीदारी रहा। उनका स्पष्ट मत था कि राजनीतिक शक्ति ही सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्गों को एकजुट कर लोकतांत्रिक राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इससे यह प्रमाणित होता है कि उनके राजनीतिक विचार भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास के लिए अत्यंत प्रभावशाली रहे।

### 3. दलित राजनीति के विकास में बहुजन समाज पार्टी की भूमिका

वर्ष 1984 में बहुजन समाज पार्टी की स्थापना ने दलित राजनीति को संगठित मंच प्रदान किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि BSP ने दलित वर्ग को राजनीतिक नेतृत्व, संगठन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में प्रभावशाली भागीदारी का अवसर दिया। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में पार्टी के प्रभाव ने दलित राजनीति को नई पहचान और मजबूत आधार प्रदान किया। इससे यह उद्देश्य प्रमाणित होता है कि बहुजन समाज पार्टी ने दलित राजनीति को व्यापक और संगठित स्वरूप दिया।

**4. भारतीय लोकतंत्र में दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी पर कांशीराम का प्रभाव**

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कांशीराम के नेतृत्व में दलित समाज में राजनीतिक जागरूकता और मतदान में सक्रियता बढ़ी। साथ ही नेतृत्व और प्रतिनिधित्व के स्तर पर भी दलित वर्ग की भागीदारी में वृद्धि हुई। लोकतंत्र में दलित समाज की उपस्थिति पहले की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हुई। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोकतंत्र में दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत करने में कांशीराम की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

**5. समकालीन भारतीय राजनीति में कांशीराम की विचारधारा की प्रासंगिकता**

वर्तमान भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व और बहुजन एकता जैसे विषय आज भी महत्वपूर्ण हैं। कांशीराम की विचारधारा आज भी लोकतांत्रिक विमर्श में प्रासंगिक बनी हुई है। उनकी राजनीतिक सोच वंचित वर्गों को नेतृत्व और अधिकारों के प्रति जागरूक करने में आज भी प्रेरणास्रोत है। इससे अध्ययन का पाँचवाँ उद्देश्य भी प्रमाणित होता है।

## परिकल्पनाओं का प्रमाणीकरण

**1. "मान्यवर कांशीराम ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को नई दिशा प्रदान की।"**

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कांशीराम ने दलित राजनीति को केवल सामाजिक आंदोलन तक सीमित न रखकर उसे राजनीतिक शक्ति और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व से जोड़ा। इसलिए यह परिकल्पना प्रमाणित होती है।

**2. "बहुजन समाज पार्टी ने दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत किया।"**

BSP के गठन और उसके राजनीतिक प्रभाव के अध्ययन से यह सामने आया कि दलित वर्ग को एक स्वतंत्र राजनीतिक मंच और प्रभावशाली प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। अतः यह परिकल्पना भी प्रमाणित होती है।

**3. "कांशीराम की राजनीतिक विचारधारा ने सामाजिक न्याय की राजनीति को व्यापक बनाया।"**

अध्ययन में पाया गया कि कांशीराम ने सामाजिक न्याय के प्रश्न को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में स्थापित किया और बहुजन वर्ग को व्यापक रूप से जोड़ा। इसलिए यह परिकल्पना प्रमाणित होती है।

**4. "भारतीय लोकतंत्र में दलित नेतृत्व के विकास में कांशीराम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।"**

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उनके नेतृत्व और संगठनात्मक प्रयासों से दलित वर्ग में नए नेतृत्व का विकास हुआ तथा लोकतंत्र में उनकी सक्रिय भूमिका बढ़ी। अतः यह परिकल्पना भी प्रमाणित होती है।

**निष्कर्षात्मक प्रमाणीकरण**

उपरोक्त अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मान्यवर कांशीराम ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को नई दिशा और मजबूत आधार प्रदान किया। उनके राजनीतिक विचार, संगठनात्मक क्षमता और बहुजन समाज पार्टी के माध्यम से किए गए प्रयासों ने दलित राजनीति को राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली बनाया। प्रस्तुत शोध के सभी उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ अध्ययन के आधार पर प्रमाणित होती हैं।

## 10. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र *"भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास में मान्यवर कांशीराम का योगदान : एक राजनीतिक अध्ययन"* के अध्ययन, विश्लेषण एवं उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मान्यवर कांशीराम का भारतीय लोकतंत्र और विशेष रूप से दलित राजनीति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली योगदान रहा है। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र में लंबे समय से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से वंचित दलित वर्ग को संगठित राजनीतिक चेतना प्रदान की तथा उन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर अपनी भागीदारी और अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

अध्ययन के प्रथम उद्देश्य–भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय समाज की पारंपरिक जाति व्यवस्था के कारण दलित वर्ग लंबे समय तक राजनीतिक अधिकारों और सत्ता संरचना से दूर रहा। स्वतंत्रता के बाद संविधान ने समानता और प्रतिनिधित्व के अवसर प्रदान किए, किंतु व्यवहारिक रूप में दलित समाज की राजनीतिक भागीदारी सीमित बनी रही। ऐसी परिस्थितियों में कांशीराम का राजनीतिक नेतृत्व दलित राजनीति के लिए एक नए ऐतिहासिक मोड़ के रूप में सामने आया।

द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत मान्यवर कांशीराम के राजनीतिक विचारों के अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ कि उनकी विचारधारा का मूल आधार "बहुजन" की अवधारणा, सामाजिक न्याय, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और लोकतांत्रिक सत्ता में भागीदारी था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि

सामाजिक परिवर्तन तभी स्थायी हो सकता है जब वंचित वर्ग सत्ता और नीति-निर्धारण की प्रक्रिया में प्रभावी रूप से सहभागी हों। इस दृष्टिकोण ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को नया वैचारिक आधार प्रदान किया।

तृतीय उद्देश्य के अंतर्गत बहुजन समाज पार्टी की भूमिका के अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि BSP ने दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक वर्गों को एक संगठित राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसके माध्यम से दलित समाज को नेतृत्व, संगठन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिला। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में दलित राजनीति को नई पहचान और राजनीतिक मजबूती प्राप्त हुई। इससे स्पष्ट होता है कि BSP ने दलित राजनीति को सामाजिक आंदोलन से आगे बढ़ाकर संगठित लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

चतुर्थ उद्देश्य के अंतर्गत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि मान्यवर कांशीराम के नेतृत्व में दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी, मतदान में सक्रियता और प्रतिनिधित्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने दलित समाज में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास किया तथा उन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर अपनी निर्णायक भूमिका का बोध कराया। इससे भारतीय लोकतंत्र अधिक प्रतिनिधिक और समावेशी स्वरूप की ओर अग्रसर हुआ।

पंचम उद्देश्य–समकालीन भारतीय राजनीति में कांशीराम की विचारधारा की प्रासंगिकता– के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय, समान प्रतिनिधित्व और बहुजन एकता जैसे उनके विचार आज भी भारतीय राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण बने हुए हैं। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी वंचित वर्गों की राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक न्याय के संदर्भ में उनके विचार प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाओं का परीक्षण करने पर यह प्रमाणित हुआ कि **मान्यवर कांशीराम ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को नई दिशा प्रदान की।** उन्होंने दलित समाज को राजनीतिक रूप से संगठित कर उसे प्रभावशाली स्वरूप दिया। दूसरी परिकल्पना भी प्रमाणित हुई कि **बहुजन समाज पार्टी ने दलित वर्ग की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत किया।** तीसरी परिकल्पना के अनुसार **कांशीराम की राजनीतिक विचारधारा ने सामाजिक न्याय की राजनीति को व्यापक आधार प्रदान किया**, जो अध्ययन में सत्य सिद्ध होती है। साथ ही चौथी परिकल्पना भी प्रमाणित हुई कि **भारतीय लोकतंत्र में दलित नेतृत्व के विकास में कांशीराम की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।**

अतः संपूर्ण अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मान्यवर कांशीराम ने भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति को संगठित, प्रभावशाली और वैचारिक रूप से सशक्त बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उन्होंने लोकतंत्र को केवल मतदान तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व और सत्ता में समान भागीदारी से जोड़ा। उनका योगदान भारतीय राजनीति में केवल एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि दलित चेतना, बहुजन राजनीति और

लोकतांत्रिक समावेशन के एक महत्वपूर्ण विचारक और संगठक के रूप में स्थायी महत्व रखता है। इसलिए भारतीय लोकतंत्र में दलित राजनीति के विकास का अध्ययन मान्यवर कांशीराम के योगदान के बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता।

## 11. संदर्भ ग्रंथ सूची


I. अम्बेडकर, भीमराव रामजी, (2014). *जाति का विनाश*, नवयाना प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 95।

II. अम्बेडकर, भीमराव रामजी, (1989-2014). *डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर : लेखन एवं भाषण* (खंड 1-17), शासन प्रकाशन, मुंबई, पृ. 25, ।

III. कांशीराम, (2001). *चमचा युग*,: बहुजन समाज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.87।

IV. जाफरलॉट, क्रिस्टोफ, (2003). *भारत की मौन क्रांति : उत्तर भारत में निम्न जातियों का उदय*, परमानेंट ब्लैक, नई दिल्ली, पृ. 170।

V. ओमवेट, गेल, (1994). *दलित और लोकतांत्रिक क्रांति : डॉ. अम्बेडकर और भारत में दलित आंदोलन*, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 115 ।

VI. पाई, सुधा, (2002). *दलित उभार और अधूरी लोकतांत्रिक क्रांति : उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी*, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 46।

VII. पाई, सुधा, (2011). *विकासशील राज्य और दलित प्रश्न*, रूटलेज इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 67।

VIII. कोठारी, रजनी, (1970). *भारत में राजनीति*, ओरिएंट लॉन्गमैन, नई दिल्ली, पृ. 88।

IX. मेंडलसोहन, ओलिवर, एवं विक्जियानी, मारिका, (1998). *आधुनिक भारत में अस्पृश्य : अधीनता, गरीबी और राज्य*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 164।

X. जोधका, सुरिंदर एस. (2012). *जाति*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 53।

XI. गुरु, गोपाल (संपा.), (2009). *अपमान : दावे और संदर्भ*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 90।

XII. जेलियट, एलेनोर, (1992). *अस्पृश्य से दलित तक : अम्बेडकर आंदोलन पर निबंध*, मनोहर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 142।

XIII. भारत निर्वाचन आयोग, (1989). *सांख्यिकीय प्रतिवेदन : लोकसभा आम चुनाव 1989*, भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली, पृ. 201।

XIV. भारत निर्वाचन आयोग, (1991). *सांख्यिकीय प्रतिवेदन : लोकसभा आम चुनाव 1991*, भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली, पृ. 290।

XV. भारत निर्वाचन आयोग, (1996). *सांख्यिकीय प्रतिवेदन : लोकसभा आम चुनाव 1996*, भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली: पृ. 301।

XVI. लोकसभा सचिवालय, (1991). *लोकसभा वाद-विवाद : 10वीं लोकसभा*, नई दिल्ली: संसद भवन सचिवालय।
(कांशीराम के संसदीय वक्तव्य: पृ. 112-124)

## शोध-पत्रिकाएँ (Journal Articles)

1. सरकार, राधा, एवं सरकार, अमर, (2016). भारत में दलित राजनीति : मान्यता बिना पुनर्वितरण, *Economic and Political Weekly*, 51(20), p. 54.
2. पाई, सुधा। (2004). बहुजन राजनीति और उत्तर प्रदेश में सामाजिक परिवर्तन, *Economic and Political Weekly*, 39(14/15), p.1482.
1. भारतीय राजनीतिक विज्ञान संघ, दलित राजनीति और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, *Indian Journal of Political Science*, 65 (2), Christophe Jaffrelot - *India's Silent Revolution,* p.241.

## ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

# MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**WWW.BHARTIYASHODH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)**

**WWW.IRJMST.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**WWW.CASIRJ.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)**

**WWW.IRJMSH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**WWW.RJSET.COM**

**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**WWW.IRJMSI.COM**

**JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH**

**WWW.JLPER.COM**